खतरा : देहरादून प्रभाग के जंगलों में होप्लो कीट के प्रकोप से उड़ी विभाग की नींद

साल के 2500 दरख्तों पर 'मौत' का साया

- साल के पेड़ों के लिए दुश्मन से कम नहीं है यह कीट
- बरसात से पहले जंगलों से हटाए जाएंगे होप्लो प्रभावित पेड़

केदार दत्त, देहरादून

दूनघाटी में हरियाली पर पहले ही ग्रहण लगा है और अब जंगलों में भी साल के हरे पेड़ों पर बेवक्त 'मौत' का साया मंडरा रहा है। यह साया है साल को बरबाद कर देने वाले होप्लो कीट का, जिसकी गिरफ्त में देहरादून वन प्रभाग के विभिन्न क्षेत्रों में अब तक 2500 से ज्यादा पेड़ आ चुके हैं। होप्लो की जद में आकर सूखते दरख्तों को देख महकमे के माथे में बल पड़ गए हैं। हालांकि, अब प्रभाग की सभी आठ रेंजों में सर्वे कराया जा रहा है, ताकि बरसात से पहले ऐसे पेड़ों को चिन्हित कर उन्हें अलग किया जा सके।

बढ़ते शहरीकरण की मार समेत अन्य कारणों से दूनघाटी में हरियाली सिमटी है और अब जंगलों पर कीट प्रकोप ने चिंता बढ़ा दी है। असल में देहरादून वन प्रभाग के लगभग 53 हजार वर्ग किमी क्षेत्र में साल के पेड़ों की अधिकता है। और होप्लो कीट इस पेड़ का सबसे बड़ा दुश्मन है। 2003-04 में भी देहरादून क्षेत्र में बड़े पैमाने पर साल के पेड़ इस कीट की जद में आए थे। अब 10 साल बाद फिर से इस कीट ने साल के पेड़ों पर हमला बोला है।

फिर चाहे वह देहरादून वन प्रभाग की झाझरा रेंज हो मल्हान, थानो, आशारोड़ी अथवा बड़कोट, सभी जगह साल के पेड़ों पर होप्लो का प्रकोप देखा जा रहा है। अकेले झाझरा रेंज में ही लगभग 700 पेड़ होप्लो की जद में हैं। अभी तक लगाए गए अनुमान के मुताबिक 2500 पेड़ों पर होप्लो ने हमला बोला है। इससे महकमे के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आई हैं। झाझरा रेंज के वन क्षेत्राधिकारी आरपीएस नेगी के मुताबिक रेंज में कितने पेड़ होप्लो की जद में आए हैं, इसका सर्वे किया जा रहा है। उधर, उप प्रभागीय वनाधिकारी गुलवीर सिंह ने बताया कि सभी रेंजों को होप्लो के मद्देनजर सर्वे कराने को कहा गया है। 30 मार्च से पहले ऐसे पेड़ों का छपान कर इन्हें काटने के लिए वन विकास निगम को दे दिया जाएगा।

होप्लो कीट

होप्लो नर कीट मादा से संसर्ग में आने के 10 दिन बाद मर जाता है, जबकि मादा साल के पेड़ की छाल में अंडे देती है। एक मादा 300 से 400 अंडे देती है और 30 दिन बाद इसकी भी मौत हो जाती है। पेड़ की छाल के नीचे दिए गए अंडे लार्वा में तब्दील होने के बाद यह तने में छेद कर भीतर घुसते हैं और भीतर ही भीतर खोखला कर देते हैं। बरसात में लार्वा वयस्क कीट बनकर बाहर निकलते हैं और अन्य पेड़ों को अपनी चपेट में लेते हैं।

होप्लो का हमला

रेंज	पेड़
झाझरा	700
मल्हान	300
आशारोड़ी	200
थानो	800
बड़कोट	500

यह है श्रेणियां

- **एक** : होप्लो के प्रकोप से पेड़ पूरा सूख चुका हो
- **दो** : पत्ते सूख गए हों पर पेड़ नहीं
- **तीन** : पेड़ की कुछेक टहनियां हरी हों
- **चार** : पेड़ से बुरादा झड़ता है और गोंद निकलता है
- **पांच** : हल्का बुरादा झड़ता है
- **छह** : कटे पेड़ के ठूंठ में बुरादा
- **सात** : पेड़ की छाल में कीट के अंडे दिखना

काटना ही विकल्प

श्रेणी एक से तीन के तहत आने वाले होप्लो प्रभावित पेड़ों को काटना ही एकमात्र विकल्प होता है। इन पेड़ों का कटान कर इन्हें ढककर अन्यत्र ले जाया जाता है।

Dainik Jagran 15 January 2015